Date - 7/08/2020

Dr. Sanchlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's College, Samastipur
Email Id. - Snehababli 1987 @ gmail.com
Cont. no. - 8409587640

Class - B.A. -I (Hons.)

Topic - Comparision and Implication of Mimamsa

Scanned with CamScanner

4. उपमान (comparision)

मीमांसा दर्शन में उपमान को एक स्वतंत्र प्रमाण के रूप में स्वीकार किया गया है। उपमानजन्य ज्ञान तब होता है जब पहले से देखी गई वस्तु के सदृश्य किसी वस्तु को देखकर समझते हैं कि स्मृत वस्तु प्रत्यक्ष वस्तु के सदृश्य है। एक

5. अर्थापत्ति (Implication)

न्याय - दर्शन के चार प्रमाणों के अतिरिक्त प्रभाकर और कुमारिल अर्थापत्ति को एक स्वतंत्र प्रमाण के रूप में स्वीकार करते हैं।

दो तथ्यों के विरोधाभास को दूर करने के लिए किसी बात का सम्भुपगम या कल्पना कर लेना ही अर्थापत्ति है। उदाहरणस्वरूप "मोटा देवदत्त दिन में नहीं खाता" इस वाक्य के दो तथ्यों अर्थात् 'मोटा होने' और 'दिन में न खाने' के विरोधाभास को दूर करने के लिए देवदत्त के रात में खाने की अर्थ कल्पना की जाती है। यही अर्थापत्ति है।

मीमांसकों के अनुसार अर्थापत्ति का अन्तर्भाव किसी अन्य प्रमाण में नहीं किया जा सकता है। यह अन्य प्रमाणों से भिन्न स्वतंत्र प्रमाण है। मीमांसा इसके लिए निम्न तर्क देते हैं-

(1) अर्थापत्ति से प्राप्त ज्ञान प्रत्यक्ष से भिन्न है क्योंकि यहाँ इन्द्रिय और अर्थ का सन्निकर्ष नहीं होता। प्रस्तुत उदाहरण में हमने देवदत्त को रात में भोजन करते हुए नहीं देखा है।

Scanned with CamScanner

(2) अर्थापत्ति अनुमान से भिन्न है क्योंकि अनुमान हेतु को देखकर निगमन (फल) की ओर जाता है। अर्थापत्ति फल देखकर हेतु की कल्पना करता है। पुनः अर्थापत्ति के लिए व्याप्ति सम्बन्ध का होना आवश्यक नहीं है।

(3) यह शब्द प्रमाण से भी भिन्न है क्योंकि किसी आप्त वचन के द्वारा हमें यह बात मालूम नहीं हुई है कि देवदत्त रात में भोजन करता है।

अर्थापत्ति के प्रकार

मीमांसक दो प्रकार की अर्थापत्ति मानते हैं—

(i) दृष्टार्थापत्ति - इसमें किसी दृष्टार्थ या देखी गयी घटना की व्याख्या हेतु अर्थ की कल्पना की जाती है।

(ii) श्रुतार्थापत्ति - इसमें श्रुतार्थ या सुने गए विषय की व्याख्या करने के लिए अर्थ की कल्पना की जाती है।

Scanned with CamScanner